CHETANA
International Journal of Education
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))

Impact Factor
SJIF 2022 = 6.261

आलेख

Received 08.10.2022 Reviewed 16.10.2022 Accepted 28.10.2022

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

मध्यकालीन युग के प्रांरभ में हिंदु राज्यो की हार व अरबो की विजय के कारण

* *महेश शर्मा*

मुख्य शब्द : *हिन्दु–राज्य, जाति* आदि.

प्रस्तावना

भारत मे अभी तक भी किसी भी आधुनिक इतिहासकार ने चिन्तन व तथ्यो के आधार पर इतिहास का ऐसा वैज्ञानिक अध्ययन नहीं किया जिससे उन कारणो का पता चल सके, जिनसे उत्तर–पश्चिम के मुसलमानो द्वारा हमारी पराजय क्यो हुई। आधुनिक यूरोपीय लेखको ने तो यह सिद्धांत बना लिया कि हिन्दू जाति युद्ध कौशल में मध्य एशिया के अरबो तथा तुर्की की अपेक्षा अधिक हीन थी और मध्य युग में हिन्दु–राज्यो के पतन का यही मुख्य कारण था। अतः इनके कारणो को जानने का प्रयास इस लेख के माध्यम से किया गया है।

हिंदु राजाओं की पराजय के प्रमुख कारण

आंतरिक कारण–भारतीय इतिहासकारो में सर जदुनाथ सरकार का मानना है कि, देश के सबसे बड़े शत्रु उसके घर के लोग ही होते है जिसे भेदी या गद्दार कहा जाता है। किसी भी देश में आंतरिक कारण प्रमुख भूमिका निभाते है। 7वीं शताब्दी मे उत्तर–पश्चिमी भारत जिनमें अफगानिस्तान तथा सिन्ध सहित कई प्रदेश भारत से अलग हो गये। इन प्रदेशो में हिन्दू ग्रीक, हिन्दू पार्थियन, कुषाण और हुण सम्मिलित थे, जो धीरे–धीरे हिन्दु धर्म को ग्रहण कर , हिंदुओ में मिल गये थे। रूढ़िवादियो ने इन्हें “असभ्य जातियो का देश” मान लिया था। इन लोगो को अपने देश वासियो से किसी प्रकार की सहायता की कोई उम्मीद नहीं रह गयी थी अतः इन्हे स्वयं ही शत्रुओ का सामना करना पड़ा।

संगठित शक्ति का अभाव

मौर्य एवं गुप्त साम्राज्य के बाद भारत में ऐसे केंद्रीय व शक्तिशाली नेतृत्व का अभाव था जो भारत की रक्षा कर सके। उत्तर व पश्चिमी सीमा पर स्थित राज्य स्वतंत्र हो गये थे। सिंध, काबुल तथा जाबुल के राजा तथा प्रजा वीर व साहसी थे इन्होने जन–धन में अल्प होते हुए भी शक्तिशाली सेनाओ का सामना लंबे समय तक किया। भारत के दूसरे राज्यो ने यहाँ केवल नाम मात्र की भूमिका का निर्वाह किया जिसके कारण अफगानिस्तान और सिंध अपने सीमित साधनो के साथ लंबी अवधि तक इनका मुकाबला न कर सके।

ब्राह्मणवाद की प्रतिक्रिया

इस युग में प्रतिक्रिया तीव्र रुप में देखने को मिलती है।इसका प्रभाव यह हुआ कि ब्राह्मण मंत्री अपने क्षत्रिय व शुद्र शासको को सत्ता से हटाकर स्वयं मालिक बन गये। सिंध पर आक्रमण के समय उसके ब्राह्मण मंत्री चच ने सत्ता हथिया ली, चच ने जो राज्य हड़पा, उसकी कीमत उसके पुत्र दाहिर को चुकानी पड़ी। 713 ई. मुहम्मद बिन कासिम ने सिंध पर आक्रमण कर यहा हिंदु–राज्य को सदा के लिए समाप्त कर दिया। इसके अतिरिक्त कट्टरपंथी हिंदू–धर्म के बढ़ जाने से बौद्ध हिंदुओ के विरूद्ध हो गये।और अपने राजा

तथा देश के विरूद्ध ही विदेशियो की सहायता में तत्पर हो गये। सिन्ध के जाट तथा मेद इस नीति के शिकार हुए और वे बौद्धो की तरह कासिम से जा मिले।

जनता का नैतिक पतन व बढ़ता व्यभिचार

इस युग में मुख्यतया उत्तर भारत की जनता का नैतिक पतन होना शुरू हो गया जिसके परिणाम स्वरुप उनकी युद्ध–कला का दाय क्षीण होती चली गयी। कोणार्क, खजूराहो, पुरी, चितौड़, उदयपुर आदि मंदिरो के बाहर जो अश्लील मुर्तियॉ दिखायी देती है वे उस समय की प्रजा के चरित्र के अधः पतन की साक्षी है। भले ही इनके पक्ष में अन्य कोई तर्क दिये जाये फिर भी व्यभिचार तथा नैतिक पतन का आभास अवश्य मिलता है।

विषम परिस्थितियाँ

अफगानिस्तान तथा सिंध के हिंदुओ को एक ही समय युद्ध के दो मोर्चो पर युद्ध करना पड़ा। कश्मीर का राजा ललितादित्य (713–750) ई. काबुल के राजाओ का मित्र था, क्योकि उसकी सीमा पर भी अरबो का निरन्तर आक्रमण हो रहा था। परन्तु ललितादित्य के उत्तराधिकारियो में शंकरवर्मन ने मित्रता की इस नीति का त्याग कर दिया। अब काबुल के शासकों को जो शक्ति मुसलमान शत्रुओं को विजित करने में लगानी थी वह शक्ति अब कश्मीर के विरूद्ध भी लगानी पड़ती।

इस प्रकार अंत में कहा जा सकता है कि युद्ध सम्बंधी रणनीति तथा अन्य जो भी छोटी–छोटी भुले हुई वे किसी प्रकार से कम महत्वपुर्ण नहीं है क्योकि इन्ही कारणो से अंत में देश के भाग्य का निर्माण हुआ।

अरब आक्रमणकारियो की विजयो के कारण

सामाजिक एकता व संगठन

यघपि अरब आक्रमणकारी हिंदुओ से बढ़कर शुरवीर नहीं थे फिर भी वे युद्ध कला में अधिक निपुण थे। इस्लाम धर्म में जाति तथा वंश का भेद भाव नहीं था। परम्परागत मुस्लिम कुरान की शिक्षाओ का कठोरता से पालन करते और शराब भी नहीं पीते थे। इसके परिणाम स्वरूप सेना में अभूतपूर्व साहस व शक्ति का संचार हुआ। हिंदु सेना के लिए ऐसा करना संभव नहीं था क्योकि वह जाति, धर्म तथा रूढ़ियो में जकड़ी हुई थी।

सैन्य संगठन

आक्रमणकारी अच्छे घुड़सवार थे, तथा उनके पास अच्छे अरबी घोड़े तथा हथियार थे। कैम्ब्रिज मेडिवियल हिस्ट्री के अनुसार ''मध्य एशिया में तुर्कमान घोड़े सबसे अच्छे, परिश्रमशील, बुद्धिमान तथा स्वामिभक्त होते है।'' सर जदुनाथ सरकार का कहना है कि ''तुर्क अपने घोड़ो द्वारा शक्तिशाली आक्रमण के लिए प्रसिद्ध ये एशिया में किसी भी जाति के वीर और उच्च दर्जे के घुड़सवार को तुर्क सवार की उपमा दी जाती थी।''

सैन्य नेतृत्व का अभाव

हिन्दु सेनापतियो की तुलना में मुसलमान सेनापति सैन्य संचालन में अधिक निपुण थे। हिन्दु राजाओं के पास युद्ध साधनो का अभाव था, इनके राज्य एवं सेना छोटे थे, इनके पास पर्याप्त धन एवं शक्ति का अभाव था।

सैन्य व्युह रचना एवं कौशल का अभाव

हमारे सेनाधिकारी युद्ध की विषम परिस्थति में भी चालबाजी, धोखधड़ी व अन्य हथकण्ड़ो का प्रयोग नहीं करते थे। उन्हें युद्ध में पराजय स्वीकार थी परन्तु वे अपने वचन व नैतिक कर्तृव्य से पलायन नहीं करते थे। जबकि अरब और तुर्क आक्रमणकारी युद्ध जीतने के लिए किसी भी सीमा तक जा सकते थे।

विजय ही एकमात्र लक्ष्य

राजपूतो को अपनी वीरता पर अभिमान था वे युद्ध को खेल–भावना समझकर लड़ते थे, किन्तु अरब और तुर्क सैनिक विजय को अपना एकमात्र लक्ष्य मानकर युद्ध करते थे। वे युद्ध के समय अनुचित साधनो का प्रयोग करते। इसके विपरीत राजपूत राजा युद्ध में

न तो शत्रु की दुर्बलता का लाभ उठाते और नाही अनुचित युक्तियो का प्रयोग करते किन्तु अरब व तुर्क सैनिक इन कार्यो में अत्यंत कुशल थे।

जनता में हीनता व हताशा की भावना

महमूद गजनवी और मुहम्मद गौरी ने भारतीय जनता को आतंकित कर निराश कर दिया जिससे उनमें हीन भावना उत्पन्न होने लगी। इन्होनें हमारे प्रमुख नगरो को निशाना बनाया तथा उन्हें बुरी तरह नष्ट–भ्रष्ट कर दिया। इस तरह के कार्यो की पुनरावृत्ति बार–बार की गयी जिससे जनता में भय उत्पन्न हो गया और वे इन्हें अजेय समझने लगे। इस प्रकार की भावना ने हमारे समाज में हताशा की भावना का संचार किया।

अरब और तुर्को का यह भावना था कि उन्हें यहाँ इस्लाम का प्रचार तथा मूर्तियाँ, मंदिर तोड़ने के लिए ही भेजा गया है।

निष्कर्ष

योद्धापन न तो शरीर से होता है किसी वंश विशेष की संतान होने पर। वास्तव में भारतीय सैनिक तो युग–युगान्तर से बड़ा वीर रहा है जिसकी प्रंशसा मुस्लिम इतिहासकारों ने भी की है। अतः यह स्पष्ट है कि राष्ट्रहित के लिए युद्ध करने वाले मध्यकालीन पूर्वज भी किसी प्रकार से योग्यता में कम नहीं रहे होंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. स्टेनले लेनपूल कृत 'मध्यकालीन भारत'।
2. बी.ए. स्मिथ कृत द ऑक्सफोर्ड हिस्ट्री ऑफ इण्डिया।
3. टाइम्स कृत 'इण्डियन इस्लाम'।
4. मिनहाज–उस–सिराज कृत 'तबकात–ए–नासिरी' बरनी कृत 'तारीख–ए–फिरोजशाही' इलियट एण्ड डाउसन पृष्ठ 2–4
5. थॉमस वाटर्स कृत 'युवानच्यांग की भारत यात्रा' पृष्ठ – 180
6. अल– बरूनी कृत 'किताब–उल–हिन्द पृष्ठ :– 10–13
7. चचनामा : आर. सी मजूमदार 'क्लासीकल एज पृष्ठ :– 165
8. "कैम्ब्रिज मेडिवियल हिस्ट्री" पृष्ठ :– 331
9. हिन्दुस्तान स्टैण्डर्ड (सण्डे एडीशन) 7 मार्च 1954

Corresponding Author
*** महेश शर्मा** *(एम.ए.नेट–इतिहास)*
राजकीय महाविधालय, रावतभाटा
Email-maheshsharma8524@gmail.com
Mob.- *09829042595*